

gaṇa चूर्णादि zu P. 6, 2, 134. — Vgl. चूडा, चूडाकरण, °कर्मन्.

चैलि = चैडि Pravarādhj. in Verz. d. B. H. 57, 9 v. u.

चैलुकै adj. von चैलुक्य gaṇa कणवादि zu P. 4, 2, 141.

चैलुक्य patron. von चुलुक gaṇa गर्गादि zu P. 4, 1, 105. patron. des Kumārapāla H. 712.

च्यव (von 1. च्यु) s. भुवन°.

च्यवन (wie eben 1) adj. a) *beweglich* RV. 2, 12, 4. — b) *bewegend, erschütternd*: मन्ये वा च्यवनमच्युतानाम् RV. 8, 85, 4. 33, 6. च्यवो मा-नुषीणामेकः कृष्टीनामभवत्सुखा 6, 18, 2. 10, 69, 5. 6. AV. 7, 116, 1. — 2) m. a) N. einer best. Krankheit oder ihres Dämons Pā. Gā. 1, 16. — b) N. pr. eines Ṛshi (neuere Form von च्यवान), eines Sohnes des Bhṛgu, Liedverfassers von RV. 10, 19. Art. Br. 8, 21. Cat. Br. 4, 1, 3, 1. Nir. 4, 19. MBh. 1, 870. fgg. रोषान्मातुष्युतः कुतेश्च्यवनस्तेन सो ऽभवत् 898. 3, 10316. fgg. 14156. अपराधे ऽपि राजेन्द्र राजामश्रेयसे द्विजाः । भवति च्यवो यदत्सुकन्यायाः कृते पुरा ॥ 17035. HARIV. 643. VP. 354. Bhāg. P. 9, 3, 2. fgg. Vater des Rikika MBh. 13, 207. नक्षत्रस्य च संवादं मर्क्षश्च्यवनस्य च 2642. fgg. 7305. fgg. °धर्म (vgl. Ind. St. 4, 233) adj. 12, 13163. च्यवनव 1, 874. — 3, 8365. 8740. HARIV. 14150. R. 1, 70, 31. 2, 110, 19. Vikr. 79, 11. Bhāg. P. 4, 19, 9. 6, 13, 14. LIA. I, 574. 714. Ind. St. 4, 198. 418. Astronom 2, 247. Verz. d. B. H. No. 862. N. pr. eines der 7 Weisen unter dem Manu Svārokiṣha HARIV. LANGL. I, 38 (ed. Calc.: निश्च्यवन). N. pr. eines Sohnes des Mitrāju VP. 434. Bhāg. P. 9, 22, 1. des Suhotra HARIV. 1803. VP. 435. Bhāg. P. 9, 22, 5. — 3) n. nom. act. P. 6, 1, 78. Sch. a) *Bewegung* Suṣ. 1, 48, 12. — b) *Entfernung von, das Verlustiggehen*: स्थान° Bhāg. P. 8, 20, 5. — c) *das Zugrundegehen, Sterben* Vajp. 80. — Vgl. दुश्च्यवन.

च्यवनप्राण (च्य° + प्राण) m. Bez. einer *Latwerge* (अवलेह) Verz. d. B. H. No. 936.

च्यवस् (von 1. च्यु) s. तृप्यच्यवस्.

च्यवान (partic. von 1. च्यु) m. N. pr. eines Ṛshi, den die Aṣvin aus einem Greise wieder zum Jüngling machten, RV. 4, 116, 10. पुवं च्यवानमश्विना जर्त्तुं पुनर्पुवानं चक्रयुः शर्चमिः 117, 13. 118, 6. 5, 75, 5. 7, 68, 6. 71, 5. — Vgl. die jüngere Form च्यवन.

च्यव s. दुश्च्यव.

1. च्यावन (vom caus. von 1. च्यु) 1) adj. *zu Falle bringend*: दुश्च्यावच्यावन (क्र) MBh. 8, 1506. — 2) n. *das Verjagen, Vertreiben*: इदं च्यावनं स्थानात्प्रतिष्ठा च शतक्रतोः HARIV. 1512.

2. च्यावन (von च्यवन) 1) m. patron. Verz. d. B. H. 54, 5 v. u. — 2) n. N. eines Sāman Ind. St. 3, 216.

च्यावपितृ (vom caus. von 1. च्यु) nom. ag. *der in Bewegung setzt* Nir. 4, 19.

1. च्यु, च्यवते (ep. auch act.) Duārup. 22, 59. partic. च्यवान; चुच्युवे, चिच्युषे (ved. P. 6, 1, 36); च्योष्यते; अच्योष्ट, च्योष्टास्, अच्योष्टम् (P. 8, 3, 78, Sch.); च्योषोष्टम् (ebend.). 1) *schwanken, sich bewegen*: उत च्यवते अच्युता ध्रुवाणि RV. 4, 167, 8. — 2) *sich regen, sich rühren; sich von der Stelle bewegen, fortgehen, sich entfernen von (abl.)*: अग्निः सोमो व-रुणस्ते च्यवते RV. 10, 124, 4. अथ च्यवान् उतवोत्यर्थम् 59, 1. 61, 2. 113, 6. दशस्यस्ता शयवे पिच्युर्गामिति च्यवाना सुमतिं भुरगू 6, 62, 7 (vgl. च्यवाना die Arme Naigh. 2, 4). अथ ते कतिचिद्राच्युतस्यार्थकवेषमनः

II. Theil.

R. 2, 72, 5. अयोध्यायाश्च्युताः 52, 27. मार्गच्युत vom Wege abgekommen Pāṇkāt. 242, 5. धर्म्यान्मार्गान् च्यवते MBh. 2, 2357. लक्ष्याश्च्युतसायकः dessen Pfeil das Ziel verfehlt AK. 2, 8, 36. लक्ष्यतश्च्युतेषुः H. 773. यद-ङ्गात्तरमासाय (दष्टिः) च्यवते ह रिंसया sich losmachen Bhāg. P. 9, 14, 20. von Pfeilen, Waffen, die dem Bogen, der Bogensehne, der Hand entfliegen: चापाच्छ्व इव च्युतः R. 3, 60, 16. (शरान्) धनुश्च्युतान् 33, 30. MBh. 13, 4610. HARIV. 8088. शराश्चापगुणच्युताः R. 3, 33, 16. गद्या — अ-स्मद्भ्यच्युतया Bhāg. P. 3, 18, 5. — 3) *sich entfernen von (abl.)* so v. a. *untreu werden*: अस्माद्धर्मान् च्यवते M. 7, 98. कथं कुर्वन् च्यवते स्वधर्मात्, न च्यवेयं स्वधर्मात् MBh. 3, 12716. धर्मात्स्वकाच्युतः M. 12, 71. 72. HARIV. 11183. च्युता नयात् 11105. तौ हि च्युतौ स्वकर्मभ्यः M. 8, 418. 12, 70. Auch mit dem gen.: तस्य च्यवितुमिच्छसि MBh. 15, 463. — 4) *sich entfernen von* so v. a. *um Etwas (abl.) kommen, einer Sache verlustig gehen*: स स्वर्गाच्च्यवते लोकात् M. 3, 140. 8, 103. च्युताः स्म राज्यात् MBh. 3, 16699. 16744. BHATT. 7, 92. अच्योष्ट सत्त्वान्पतिः 3, 20. अस्तपन्नच्युत (तर्) verlassen von VARĀH. BRH. S. 50, 2. — 5) *fortgehen* so v. a. *vergehen, zu Nichte werden, schwinden*: उत्पद्यते च्यवते च M. 12, 96. कथं शरीरं च्यवते कथं चैवोपपद्यते MBh. 14, 455. च्यवन्तं ज्ञायमानं च 3, 12640; vgl. BURN. Lot. de la b. I. 313. यावन् च्यवते मनः Bhāg. P. 3, 28, 18. इति संभाषतो वाचं श्रुत्वा मे बुद्धिरच्यवत् MBh. 1, 5190. रतिश्च्युता RAGH. 8, 65. विधिः 3, 45. च्युताश्च BHATT. 3, 20. च्युतमन्यु 11. च्युतानिखिलविशङ्क 56. च्युते धर्मे HARIV. 11173. च्युतकर्णभङ्ग Çāk. 8, v. I. misslingen: मन्त्रे गुप्ते सम्यगनुष्ठिते च नात्पो ऽप्यस्य च्यवते काश्चिदर्थः MBh. 5, 1089. — 6) *herauskommen, hinausgehen, herausfließen, herausströmen*: योधिचनाच्युताः — तेरुर्निमुतो नदीम् R. 2, 68, 17. च्यवते तु ततो घोरारुर्भात HARIV. 14398. देहाच्चैव मलाश्च्युताः M. 3, 132. न तेवानागते काले देहाच्च्यवन्तं जीवितम् R. 2, 39, 15. (सरपूः) ब्रह्मसरश्च्युता 1, 26, 9. रक्तैः कोत्तैरुश्च्युतैः BHATT. 9, 74. तन्मुखाभोजच्युतं हरिकवामृतम् Bhāg. im ÇKDh. यः स्नेहश्च्यवते त-स्मात् Suṣ. 2, 12, 12. von der Rede, die aus dem Munde entströmt: (वचनम्) दानवेन्द्रमुखाच्युतम् MBh. 13, 2183. R. 3, 14, 8. 68, 24. मन्वाश्च-र्षिमुखाच्युताः 2, 23, 22. उपस्थितं भयं घोरं दिव्यपन्नमुखाच्युतम् 1, 74, 12. — 7) *herabfallen, fallen*: द्वाविवाका नभश्च्युतौ MBh. 1, 7730. 3, 12253. याश्च्यवते ऽम्बरात्ताराः काले काले निराकृताः R. 5, 13, 31. स्वतश्च्युतं व-क्त्रिमिवाद्भिर्भुवः (निर्वापयितुं न शक्नोति) RAGH. 3, 58. AV. 9, 2, 15. च्यु-ताः स्थूलोपला गिरिः AK. 2, 3, 6. 3, 2, 53. H. 1036. 1490. युवो चेत् शपिनेव च्युतौ भुवि KATHĀS. 6, 17. काण्डच्युतभुज Megh. 93. MĀLAV. 56. Çāk. 41. 138. Pāṇkāt. II, 87. Vid. 217. पथि च्युतं तिष्ठति दिष्टरत्नितम् Bhāg. P. 7, 2, 40. च्युत in der Astrol. in den ἀποκλίματα stehend VARĀH. LAGHUV. 10, 5; vgl. BRH. 12, 5. Ind. St. 2, 267. — 8) *zu Falle kommen* (unelg.): द्रोहश्च्युतानाम् Pāṇkāt. I, 316. क्षीणलोकाश्च्यवन्ते MUND. Up. 1, 2, 9. न तु मामभिजानन्ति तन्नेनातश्च्यवन्ति ते zu niederen Geburten herabsinken Bhāg. 9, 24. mit einem instr. abnehmen an: यस्तु न च्यवते नित्यं यशसा वर्चसा श्रिया MBh. 3, 14141. moralisch sinken: च्युतात्मन् KUMĀRAS. 3, 81. — 9) *in Bewegung setzen, erschüttern*: यस्ता विस्त्रानि चिच्युषे RV. 4, 30, 22. — 10) *in's Werk setzen, moltri; schaffen, machen*: या वृत्रा पारवति सना नवा च चुच्युवे RV. 8, 45, 25. (उपासः) भूरि च्यवन्त वस्तवे 1, 48, 2. — 11) *fortgehen lassen* so v. a. *vergessen lassen*: मा च्योष्टु MĀHĀNĀB. Up. in Ind. St. 2, 85. — caus. च्यावयामि (Padap.: च्यव°); अच्युय-

67\*